International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

दीपिका पिपरदे
शोधार्थी, गृहविज्ञान संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. वर्षा चौधरी
प्राध्यापक, गृहविज्ञान संकाय,
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होशंगााबाद (म.प्र.)
डॉ. भारती दुबे
प्राध्यापक, गृहविज्ञान संकाय,
शासकीय गृहविज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होशंगााबाद (म.प्र.)

प्रस्तुत शोध पत्र में बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोधकार्य हेतु बैतूल जिले के 300 आदिवासी बालक व बालिकाओं {150 गोंड (75 बालक एवं 75 बालिकाएं) तथा 150 कोरकू (75 बालक एवं 75 बालिकाएं)} का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) के मापन के लिए इन आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के शारीरिक माप (ऊंचाई व वजन) को लिया गया तथा उनका बॉडी–मास इंडेक्स ज्ञात किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए काई वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया। शोध परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि बैतूल जिले के गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में सार्थक अंतर पाया गया तथा गोंड बालिकाओं का पोषण स्तर सर्वाधिक बेहतर जबकि गोंड बालकों का पोषण स्तर सबसे निम्न पाया गया, अर्थात् गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में भिन्नताएँ पाई गईं।

मुख्य शब्द : गोंड एवं कोरकू आदिवासी, पोषण स्तर

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भारत जैसे देश में कुपोषण तथा कम पोषण की समस्या बहुत अधिक है। भारत में हरित क्रांति के फलस्वरूप भोज्य पदार्थ तथा अनाज काफी मात्रा में उत्पादित किये जा रहे हैं, परन्तु फिर भी जनसंख्या की वृद्धि के कारण तथा अधिकांशतः जनता कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण गुणवत्तायुक्त व उत्तम पोषण युक्त आहार लेने से वंचित रहती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य, काम तथा स्थिति के अनुसार कम या अधिक कैलोरी आवश्यक होती है। हम सभी के लिए समान कैलोरी आवश्यक नहीं होती है। शाकाहारी होने से भारतीय प्राणिज प्रोटीन और चबीयुक्त भोजन नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप बालक एवं बालिका ग्वाएटर (घेंघा), खून की कमी (एनीमिया), त्वचा सम्बन्धि रोग एवं रतौंधी आदि से ग्रसित होते हैं। आज भी ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी, अंधविश्वास, अशिक्षित परिवारों में बालक एवं बालिका के पोषण पर ध्यान नहों दिया जाता है। इसी कारण के चलते आदिवासी समाज में विशेषकर गोंड तथा कोरकू जनजाति में भोजन का उद्देश्य मात्र पेट भरना होता है, जिस कारण अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह होते हैं। यदि भोजन में अनाज, फलियां और तिलहनों के आधार पर परिष्कृत सहायक आहार जोड़ दिया जाये तो उससे बालकों के स्वास्थ्य और आहारीय स्तर में सुधार होता है। बालक एवं बालिका देश के भविष्य हैं। यदि इनके ही स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जाये तो भविष्य खतरे में आ जायेगा।

प्रस्तुत शोध में लिए गये आदिवासी बालक–बालिका को आहार सम्बन्धी आदतों के प्रति जागरूकता नहीं है। आज के समय में भी ग्रामीण क्षेत्र में अशिक्षित परिवारों में बालक एवं बालिका के पोषण स्तर पर ध्यान नहीं देते हैं। व्यक्ति जिस भी धर्म–जाति का हो, पोषण उसके जीवन के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिक आवश्यकता है। संसार की अधिकांश जनसंख्या कुपोषण तथा कम पोषण का शिकार है। इसके प्रमुख दो कारण हैं –

1) समुचित मात्रा में भोज्य पदार्थों का उपलब्ध न होना।
2) जनता की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पोषणयुक्त भोज्यपदार्थ जैसे दूध, मांस, मछली, अण्डा, दाल, हरी सब्जियां समुचित मात्रा में उपयोग में न ला पाना।

इस शोध के माध्यम से आदिवासी बालक एवं बालिका को उनके उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग कर भोजन में पाये जाने वाले पोषक तत्वों की जानकारी देकर शरीर के समुचित विकास पैदा करना है। स्वास्थ्य पर पड़ रहे प्रभाव का अध्ययन कर सकारात्मक एवं नकारात्मक परिणामों को प्रकट करके तथा कुपोषण जैसी बहुत बड़ी समस्या को कम करना और पोषण स्तर में संतुलन बनाए रखना है।

अतः इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी ने मध्यप्रदेश राज्य के बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास इस अध्ययन द्वारा किया है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे **मैती, एस. (2011)** ने ''पश्चिम बंगाल के शहरी और ग्रामीण प्रारम्भिक किशोरी बालिकाओं के पोषण की स्थिति पर एक तुलनात्मक अध्ययन'' किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रारंभिक किशोरावस्था की स्कूली लड़कियों में कुपोषण की प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं को देखा गया, इसलिए विशेष समुदायों की अल्पपोषण की स्थिति को रोकने के लिए ग्रामीण समुदायों के लिए विभिन्न विकासात्मक और स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों को तैयार करने की आवश्यकता है। **श्रीवास्तव, अनुराग एवं अन्य (2012)** ने भारत में शहरी मलिन बस्तियों का स्कूल आयु के बच्चों को पोषण सम्बन्धी स्थिति का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि ज्यादातर स्कूल उम्र के झुग्गी–झोपड़ियों के बच्चों की पोषण स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। कुपोषण, दोषपूर्ण पोषण से उत्पन्न स्थिति, प्रतिरक्षा प्रणाली का कमजोर करता है। कौशल आधारित पोषण शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण और कार्यक्रम की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। **दांडेकर, रश्मि (2013)** ने ''महाराष्ट्र के सरकारी स्कूलों के युवा किशोरियों के बीच पोषण का स्तर, रूग्णता और मासिक धर्म की समझ की तुलना'' का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि किशोरावस्था जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें तीव्र शारीरिक विकास के लिए उचित विकास के लिए अतिरिक्त पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इन पोषण सम्बन्धी अनुपूरक के अभाव से विभिन्न समस्याएं होती हैं और भविष्य में स्वास्थ्य की स्थिति के वयस्क होने का खतरा होता है। यह विकासात्मक परिवर्तनों के बारे में उचित ज्ञान रखने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। **पाटनकर, प्रतिभा (2013)** ने ''भारत के रायपुर शहर छत्तीसगढ़ के कुर्मी किशोरों की पोषण सम्बन्धी स्थिति'' का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि पोषण सम्बन्धी स्थिति में सुधार के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा अनुशासित किशोरों के अनुकूल स्वास्थ्य सेवाओं को लागू करना आवश्यक है। **ठाकुर, रचना एवं अन्य (2015)** ने ''मध्य भारतीय शहर (सागर) के लड़कों और लड़कियों के बीच पोषण की स्थिति'' का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि लैंगिक असमानताओं को खत्म करने और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार के लिये स्वास्थ्य कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की बहुत आवश्यकता है। **शशिकला, पी. (2016)** ने भारत के

आंध्रप्रदेश के रेंग्पीचरेला मंडल के सरकारी स्कूल के बच्चों – लड़कों और लड़कियों के पोषण स्तर के मूल्यांकन का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि पोषण का स्तर को व्यक्तिगत स्वच्छता और सामाजिक, आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित पाया गया। सरकारी स्कूलों के लड़के और लड़कियों में स्वच्छता के बारे में ज्ञान और जागरूकता प्रदान करने की आवश्यकता है। **वी., रणधीर (2016)** ने ''एक शहरी क्षेत्र के किशोरों में खाद्य और अधिक वजन का अध्ययन'' किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि आधुनिक युग में दोषपूर्ण आहार की आदतें किशोरों के पोषण, स्वास्थ्य में बाधा डालती है। जंक फूड का सेवन करने की प्रवृत्ति से बच्चों और युवाओं पर वयस्कों की तुलना में अधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। जंक फूड के सेवन से किशोरों को पोषण के स्तर पर भी प्रभाव पड़ता है, जिस कारण से अधिक वजन होता है। **याहिया, नजत एवं अन्य (2016)** ने विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच वजन की स्थिति, आहार की आदतों और शारीरिक गतिविधि और पोषण सम्बन्धी ज्ञान का आंकलन पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि छात्रों की आहार सम्बन्धी आदतें संतोषजनक थी। शारीरिक गतिविधि, स्वस्थ और अस्वास्थ्यकर आहार को आदतों के छात्रों के ज्ञान और पोषण सम्बन्धी ज्ञान में सुधार की आवश्यकता थी।

उद्देश्य :–

बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपकरण :–

प्रस्तुत शोधपत्र में बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) के मापन के लिए इन आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के शारीरिक माप (ऊंचाई व वजन) को लिया गया है एवं उनका बॉडी–मास इंडेक्स ज्ञात किया गया है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध हेतु बैतूल जिले के 300 आदिवासी बालक व बालिकाओं {150 गोंड (75 बालक एवं 75 बालिकाएं) तथा 150 कोरकू (75 बालक एवं 75 बालिकाएं)} का चयन उद्देश्यपूर्ण

न्यादर्श विधि द्वारा करके इन आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के शारीरिक माप (ऊंचाई व वजन) लेकर उनका पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) ज्ञात किया गया तथा मॉस्टर शीट तैयार की गई। काई वर्ग परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया एवं प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना :– बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

तालिका

बैतूल जिले के गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स का वर्गीकरण) की जानकारी संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	लिंग	कुल संख्या	बॉडी–मास इंडेक्स का वर्गीकरण			'काई वर्ग' मान	सार्थकता स्तर
			सामान्य से कम वजन वाले	सामान्य वजन वाले	सामान्य से अधिक वजन वाले		
गोंड	बालक	75	47	23	5	33.93	< 0.01
	बालिका	75	19	52	4		
कोरकू	बालक	75	24	42	9		
	बालिका	75	21	43	11		
कुल		300	111	160	29		

स्वतंत्रता के अंश – 06 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 16.812

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित बैतूल जिले के गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) की जानकारी संबंधी परिणामों से स्पष्ट है कि गोंड बालकों में से 47 सामान्य से कम वजन वाले, 23 सामान्य वजन वाले तथा 05 सामान्य से अधिक वजन वाले पाए गए। गोंड बालिकाओं में से 19 सामान्य से कम वजन वाली, 52 सामान्य वजन वाली तथा 04 सामान्य से अधिक वजन वाली पाई गई। कोरकू बालका में से 24 सामान्य से कम वजन वाले, 42 सामान्य वजन वाले तथा 09 सामान्य से अधिक वजन वाले पाए गए। कोरकू बालिकाओं में से 21 सामान्य से कम वजन वाली, 43 सामान्य वजन वाली तथा 11 सामान्य से अधिक वजन वाली पाई गई। प्रस्तुत सारणी में प्रदर्शित परिणामों से यह भी स्पष्ट है

कि गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) के लिए प्राप्त 'काई वर्ग' का मान 33.93 स्वतंत्रता के अंश 06 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिए निर्धारित मान 16.812 की अपेक्षा अधिक है, जो सार्थक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बैतूल जिले के गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) की जानकारी में, सामान्य वजन वालों की संख्या सर्वाधिक (53.33 प्रतिशत) जबकि सामान्य से अधिक वजन वालों की संख्या सबसे कम (9.67 प्रतिशत) पाई गई। प्राप्त 'काई वर्ग' परीक्षण के मान से यह स्पष्ट है कि बैतूल जिले के गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में वास्तविक एवं सार्थक अंतर पाया गया तथा गोंड बालिकाओं का पोषण स्तर सर्वाधिक बेहतर जबकि गोंड बालकों का पोषण स्तर सबसे निम्न पाया गया, अर्थात् गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में भिन्नताएँ पाई गईं।

उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी परिकल्पना 'बैतूल जिले के गोंड एवं कोरकू आदिवासी बालक व बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में सार्थक नहीं पाया जायेगा' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

बैतूल जिले के गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में वास्तविक एवं सार्थक अंतर पाया गया तथा गोंड बालिकाओं का पोषण स्तर सर्वाधिक बेहतर जबकि गोंड बालकों का पोषण स्तर सबसे निम्न पाया गया, अर्थात् गोंड तथा कोरकू आदिवासी बालक एवं बालिकाओं के पोषण स्तर (बॉडी–मास इंडेक्स) में भिन्नताएँ पाई गईं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें :–

1. अग्रवाल, निधि (2006) : **आहार एवं पोषण विज्ञान,** अग्रवाल साहित्य सदन, राजस्थान
2. अरोरा, सन्तोष (2014) : **पापुलेशन एण्ड एजुकेशन प्राब्लम्स,** वन इण्डिया इकोनोमिक वीकली, दिल्ली, दिसम्बर 2014

3. आर्य, डॉ. सत्यदेव (2000) : **आहार एवं पोषणहार**, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर
4. अस्थाना, विपिन; श्रीवास्तव, विजया एवं अस्थाना निधि (2013) : **शैक्षिक अनुसंधान एवं साख्यिंकीय,** अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
5. इन्द्रोलिया, रघुवीर (2010) : **ग्रामीण भारत में कुपोषण समस्या एवं समाधान,** रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, राजस्थान
6. कानूनगो, मंगला (2008) : **पोषण एवं पोषण स्तर,** रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
7. मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ (2013) : **सामाजिक अनुसंधान की विधियां,** विवेक प्रकाशन, दिल्ली
8. नारायण, सुधा (1998) : **आहार नियोजन,** रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर
9. शर्मा, श्रीनाथ (2009) : **मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियां,** मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ क्र. 140–141
10. सुखिया, एस.पी. (2005) : **पोषण एवं आहार विज्ञान के मूल सिद्धान्त,** शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं., पृष्ठ क्र. 07
11. स्वामीनाथन, एम. (2008) : **आहार एवं पोषण,** एन.आर. ब्रदर्स प्रकाशक, इन्दौर, पृष्ठ क्र. 02–03
12. टण्डन, उषा (2008) : **आहार एवं पोषण पर प्रारम्भिक विचार,** साहित्य प्रकाशन, आगरा, नवीन संस्करण।
13. वर्मा, ओमप्रकाश (1987) : **सामाजिक शोध तथा सर्वेक्षण,** सरस्वती सदन, दिल्ली
14. वर्मा, प्रमिला (2007) : **आहार एवं पोषण,** बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी

Journals & Survey –

1. **दांडेकर, रश्मि (2013)** : ''महाराष्ट्र के सरकारी स्कूलों के युवा किशोरियों के बीच पोषण का स्तर, रूग्णता और मासिक धर्म की समझ की तुलना'', *IISS 213.*
2. **मैती, एस. एवं अली, के.एम. (2011)** : ''पश्चिम बंगाल के शहरी और ग्रामीण प्रारम्भिक किशोरी बालिकाओं के पोषण की स्थिति पर एक तुलनात्मक अध्ययन'', *जर्नल ऑफ नेपाल पीडियाट्रिक सोसाइटी 31(3), पृष्ठ क्र. 169–174.*

3. **पाटनकर, प्रतिभा (2013)** : ''भारत के रायपुर शहर छत्तीसगढ़ के कुर्मी किशोरों की पोषण सम्बन्धी स्थिति'', *International Journal of Scientific and Research Publication, Volume-3, ISSUE-11, Page No. 1-6.*

4. **शशिकला, पी. (2016)** : ''भारत के आन्ध्रप्रदेश के रेम्पोचेरला मंडल के सरकारी स्कूल के बच्चों में लड़कों और लड़कियों के पोषण स्तर का मूल्यांकन'', *जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिस, वाल्यूम–7, अंक 10, पृष्ठ क्रमांक 140–144.*

5. **श्रीवास्तव, अनुराग एवं अन्य (2012)** : ''भारत में शहरी मलिन बस्तियों का स्कूल आयु के बच्चों की पोषण सम्बन्धी स्थिति का एक परिदृश्य'', *सार्वजनिक स्वास्थ्य के अभिलेखागार, वाल्युम–7 (1), पृष्ठ क्र. 8.*

6. **ठाकुर, रचना और गौतम, के. राजेश (2015)** : ''मध्य भारतीय शहर (सागर) के लड़कों और लड़कियों के बीच पोषण की स्थिति'', *मानवशास्त्रीय समीक्षा, वॉल्यूम–78(2), पृष्ठ क्र. 197–212.*

7. **वी., रणधीर (2016)** : ''एक शहरी क्षेत्र के किशोरों में खाद्य और अधिक वजन का अध्ययन'', *International Journal of Community Medicine and Public Health 2016, Apr. 3(4), पृष्ठ क्र. 813–817.*

8. **याहिया, नजत एवं अन्य (2016)** : ''विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच वजन की स्थिति, आहार की आदतों और विश्वासों, शारीरिक गतिविधि और पोषण सम्बन्धी ज्ञान का आंकलन'', *सार्वजनिक स्वास्थ्य में परिपेक्ष्य, वाल्यूम–136 (4), पृष्ठ क्र. 231–244.*